

---

# Vastu Suktam

वास्तुसूक्तम्

## Document Information

---

Text title : vAstusUkta

File name : vAstusUktam.itx

Category : veda, svara, sUkta

Location : doc\_veda

Proofread by : Palak

Description-comments : There is another in Krishnayajurveda

Source : <https://sanskritdocuments.org/mirrors/rigveda/e-text.htm>

Latest update : January 11, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 12, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

## Vastu Suktam

### वास्तुसूक्तम्



ऋग्वेदसंहितायां सप्तमं मण्डलं, ७.५४;१-३, ७.५५;१,

ऋग्वेदसंहितायां अष्टमं मण्डलं, ८.०१७.१४।

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ७.०५४.०१

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो ।

अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व ॥ ७.०५४.०२

वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या ।

पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७.०५४.०३

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।

सखा सुशेव एधि नः ॥ ७.०५५.०१

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।

द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ८.०१७.१४

स्वररहितम् ।

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ७.०५४.०१

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो ।

अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व ॥ ७.०५४.०२

वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या ।

पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७.०५४.०३

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।

सखा सुशेव एधि नः ॥ ७.०५५.०१

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।

द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ८.०१७.१४

---



*Vastu Suktam*

pdf was typeset on January 12, 2021



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

